(१०) विषयों की तृष्णा को...

विषयों की तृष्णा को छोड़ के... वेष दिगम्बर धार,
विषयों की तृष्णा को छोड़, संयम की साधना में,
चल पड़े वीरकुमार ॥

परिग्रह की चिन्ता को तोड़ के निज के चिन्तन में,
रम रहे वीरकुमार॥ टेक॥

यह जीव अनादि से, है मोह से हारा,
चहुँगति में भटक रहा, दुःख सहता बेचारा;
कोई नहीं है शरण अतः, आतम की शरणा में,
जाना जगत् असार, चल पड़े वीरकुमार॥ 1॥

प्रभु चल पड़े वन को, ध्यायें निज चेतन को,
सब राग तन्तु तोड़े, काटें भव बन्धन को;
फिर मोह शत्रु नाशें और क्षायिक चारित्र धारें,
जिसमें है आनन्द अपार, चल पड़े वीरकुमार॥ 2॥

कर चार घातिया क्षय, प्रगटे चतुष्ट अक्षय,
सारी सृष्टि झलके, परिणति निज में तन्मय;
शाश्वत शिवपद पायें और अब मुक्तिवधू ब्याहें,
हो भव-सागर पार, चल पड़े वीरकुमार॥ 3॥